ISSN 2278-8808
UGC APROVED SR. NO. 49366
SJIF 2016 = 6.177
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

किशोरों में आक्रामकताः एक सामयिक अध्ययन

सोनिया स्थापक[1], Ph. D., शक्ति यादव[2] & जय हिन्द विश्वकर्मा[3]

[1]सहायक प्राध्यापक,

[2]शोध छात्र, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छ.ग.

Abstract

प्रस्तुत शोध में बिलासपुर जिले के किशोरों में आक्रामकता का अध्ययन किया गया है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य लिंग स्थानीयता तथा सह शिक्षा व एकल शिक्षा के आधार पर किशोरों की आक्रामकता का अध्ययन करना है। इन उद्दे" यों की पूर्ति हेतु बिलासपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 160 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा उपकरण कुमारी रोमा पाल तथा डा. तसनीम नकवी द्वारा निर्मित आक्रामकता मापनी का प्रयोग किया गया है परिणाम स्वरूप पाया गया कि लिंग के आधार पर आक्रामकता में कोई अन्तर नहीं है, जबकि स्थानीयता सह शिक्षा तथा एकल शिक्षा का आक्रामकता पर प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्दः *आक्रामकता किशोर*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भूमिकाः—

मानव जीवन पशु एवं वनस्पति जगत से भिन्न है और शिक्षा ही इसे भिन्न बनातो है क्योंकि शिक्षा ही मानव के मूल्य प्रदान करती है और ये मूल्य मानव जीवन की विभिन्नता का आधार है। मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है, उसका धर्म है उसका अस्तित्व है। मनुश्य अपने जीवन में शांतिपूर्वक सह अस्तित्व के साथ सभी गतिविधियों को करना चाहता है। परन्तु जब कभी मनुश्य की इच्छाएं या आव" यकता अवरोधित हो जाती हैं तो वह क्रोधित होकर बाधाजन्य वातावरण के विरूद्ध किया करता है, फलस्वरूप आक्रामकता का जन्म होता है।

उदाहरणार्थः— एक खाना खाते हुए कुत्ते की पूंछ जब कोई बालक खींचता है या उसे किसी प्रकार परे" ाान करता है तो वह भौंकते लगता है और बाधा उत्पन्न करने वाले बालक को काटने के लिए दौड़ता है। इसी तरह जब किसी बच्चे के खेल में कोई दूसरा बच्चा बाधा उत्पन्न करता है तो वह चिल्लाता है अथवा अपने अभिभावक या मित्र को सहायता के लिए पुकारता है या फिर वह गुस्से में मारता है अथवा नोंचता है।

आक्रामक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के विध्वंशपूर्ण कार्य करने लगतें है, वस्तु उठाकर फेंकने लगते ह या फिर अभद्र भाशा का प्रयोग करने लगते हैं। उनमें बदलें की भावना जन्म लेती है, ऐसे व्यक्ति आंतरिक रूप से बहुत ही परेशान व असुरक्षित होतें है। कभी–कभी न चाहते हुए भी नाकारात्मक या समाज विराधी कार्य करने लगते हैं।

भाोधकर्ता ने आक्रामकता पर आधारित निम्नलिखित साहित्य का अध्ययन किया:–

अबासियूबॉग, तेजुद्दीन अबिओला तथा ऑवोडोहो उडोफिया (2011) ने कम्प्रेटिव स्टडो ऑफ अग्रेसन अमॉग्स्ट नाइजेरियन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स इन नाइजर डेल्टा रीजन पर एक शोध किया जिसमें उन्होंने पाया कि कला के विद्यार्थी चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थियों से ज्यादा आक्रामक है। उन्होंने यह भी पाया कि आम तौर पर उच्च स्तरीय शिक्षा संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आक्रामकता उच्च स्तर की होती है।

लैशीड (2000) ने फिमेल एडोलसेन्ट अग्रेसन : ए रिव्यु आफ द लिटरेचर एण्ड कोरिलेट्स ऑफ अग्रे" ान नामक भाोध किया जिसमें इन्होंने पाया कि लड़को की तुलना में लड़किया ज्यादा संबंधित आक्रामकता ;साथियों का बहिश्कार, सामूहिक बहिश्कार, बातचीत से दूरी इत्यादिद्ध का इस्तेमाल करती हैं और ऐसी लड़कियॉ जो प्राथमिक कक्षाओं में ज्यादा संबंधित आक्रामकता का प्रयोग करतो है, माध्यमिक स्तर तक आते आते भौतिक रूप से भी आक्रामक हो जाती है।

अहमद (2012) ने माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों कि आक्रामकता के स्तर पर एक भाोध किया जिसका उद्दे" य था धर्म व स्थानीयता का आक्रामकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। इस भाोध में उन्होंने पाया कि मुस्लिम छात्र हिन्दू छात्र की तुलना में व भाहरी छात्र ग्रामीण छात्रों की तुलना में ज्यादा आक्रामक होते है।

ओकीफी (1997) ने एडॉल्ससेन्ट्स एक्सपोजर टू कम्यूनिटि एण्ड स्कूल वायलेंस नामक अपने भाोध में पाया कि स्कूल में आक्रामकता के दृ" य जैसे लड़ाई, छेड़–छोड़, हथियारों का प्रदर्शन देखकर भाारीरिक आक्रामकता छात्राओं में छात्रों की तुलना में अधिक होती है।

राता एट अल (2009) ने कि" ाोरों में सामाजिक डर, अवसाद व अपने साथियों द्वारा प्रताड़ना नामक भाोध किया जिसमें इन्होंने 3156 न्यादर्श के उपर एक सवक्षण किया जिसमें यह पता चला कि किशोरों में अवसाद सामाजिक डर भी आक्रामकता को बढ़ावा देता है।

ओशर एट. अल. (2004) ने एकोलोजिकल प्रासपक्टिव एण्ड एफेक्टिव प्रैक्टिसेस फॉर कॉम्बैटिन्ग स्कूल अग्रेसन एण्ड वायलेंस नामक शोध में पाया कि वे कक्षाएं जिनमें अनुशासन की कमी होती है तथा शिक्षकों द्वारा कक्षा में बच्चों के आक्रामक व्यवहार व उनके द्वारा किए जाने वाले छेड़–छाड़ पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो वे भाारीरिक रूप से ज्यादा आक्रामक हो जाते है।

स्लैबी (1994) ने आक्रामक व्यवहार में लिंग का अंतर नामक अपने शोध में पाया कि लड़कियों की तुलना में लड़के बचपन से ही शारीरिक व शाब्दिक आक्रामकता में लिप्त पाए जाते है। साथ ही लड़कियॉ आक्रामकता के अप्रत्यक्ष विधियों का ज्यादा प्रयोग करती पायी जाती है और इन अप्रत्यक्ष विधियों में वे ज्यादातर अपने प्रतिद्वंदियों की अफवाह उड़ाना, भेदभावपूर्ण रवैया अपनाना व गलत बातों का प्रचार करना इत्यादि प्रयोग करती हैं।

अध्ययन की आवश्कताः–

बालक समाज में रहकर जीवन के विभिन्न तरीकों से अवगत होता है। पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी वातावरण में विद्यार्थियों मे सदगुणों, बुद्धिमत्ता, सदाचार और सीखने की भाक्ति का विकास यर्थाथ रूप से होता है। यदि छात्रों को उचित पकार से शैक्षिक वातावरण में विकसित करें तो वे पूर्ण रूप से विकसित होते है। पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी वातावरण में समायोजन न कर पाने की स्थिति में विद्याथियों में तनाव, चिंता, भय, क्रोध, चिड़चिड़ापन व अवसाद उत्पन्न हो जाता है जिसके कारण छात्रों में आक्रामक व्यवहार का विकास होता है। छात्रों में बढते आक्रामकता के कारणों को जानने तथा आक्रामकता को कम करने के उपायों की जानकारी हेतु छात्रों में व्याप्त आक्रामकता पर आधारित शोध की आव" कता महसूस की गई है।

उद्दश्य :–

1. लिंग के संदर्भ में किशारों की आक्रामकता का अध्ययन ।
2. स्थानीयता के संदर्भ में किशारों की आक्रामकता का अध्ययन ।
3. सह–शिक्षा व एकल शिक्षा के संदर्भ में किशारों की आक्रामकता का अध्ययन ।

परिकल्पनाऍः–

सांख्यकिय परीक्षण हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण कियाः

- **Ho1.** लिंग के आधार पर किशोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- **Ho2.** स्थानीयता के आधार पर किशोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- **Ho3.** सह–शिक्षा व एकल शिक्षा के आधार पर कि" ाोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्याः–

इस शोध में बिलासपुर के समस्त माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी ने छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले का चयन किया तथा संभाव्यता प्रतिदर्शन के यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए चार शासकीय माध्यमिक शालाओं का चयन कर 160 विद्यार्थियों को अपने भाोध के न्यादर्श हेतु लिया ।

उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में विद्याथियों के आक्रामकता का स्तर मापने हेतु कुमारी रोमा पाल तथा डॉ. तसनीम नकवी द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत आक्रामकता मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेशणः–

प्रस्तुत शोध में फलांकन की प्रक्रिया से प्राप्त अंक सामान्य तौर पर वितरित पाये गये इसलिए अंको के सांख्यिकी विश्लेशण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं विश्लेशणः–

परिकल्पना

Ho1. लिंग के आधार पर कि" ाोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1. **छात्र एवं छात्राओं के आक्रमकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मूल्य**

क. सं.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	कि	टी मूल्य	परिणाम
1	***छात्र***	100	88.68	13.32	158	4.17	परिकल्पना
2	***छात्राएं***	60	79.50	13.63			अस्विकृत

इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के आक्रामकता के परीक्षण गणना से प्राप्त टी मान का मूल्य 4. 17 है। टी सारणी मान, स्वतंत्रता अंश (df) 158 के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 है। टी के मान मूल्य को टी के सारणी मान के साथ गणना करने पर पाया कि टी मान मूल्य, टी सारणी मान मूल्य से ज्यादा है।

अतः शून्य परिकल्पना लिंग के आधार पर कि" ाोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा अस्वीकृत की जाती है। अतः हम कह सकते है कि लिंग की आक्रामकता में भूमिका होती हैं और मध्यमान की तुलना करने पर पाये हैं कि प्रस्तुत भाोध के परिणाम स्वरूप छात्र ;डत्र88.68द्ध छात्राओं की तुलना में अधिक आक्रामक होते है।

परिकल्पना

Ho2- स्थानीयता के आधार पर कि" ाोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक 2. **ग्रामीण एवं भाहरी विद्यार्थियों के आकमकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मूल्य**

क. सं.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	कि	टी मूल्य	परिणाम
1	***ग्रामीण***	80	88.16	13.05	158	2.67	परिकल्पना
2	***भाहरी***	80	82.13	14.61			अस्विकृत

इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के आक्रामकता के परीक्षण से प्राप्त टी मान का मूल्य 2.67 है। टी सारणी मान, स्वतंत्रता अंश (df) 158 के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 है। टी के मान मूल्य को टी के सारणी मान के साथ गणना करने पर पाया कि टी मान मूल्य, टी सारणी मान मूल्य से ज्यादा है।

अतः भून्य परिकल्पना स्थानीयता के आधार पर किशोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत की जाती है। निश्कर्शतः कहा जा सकता है कि स्थानीयता का कि" ाोरों की आक्रामकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है व भाोध के परिणाम के आधार पर और मध्यमान की तुलना करने पर पाया गया कि ग्रामीण छात्रों (M=88-16) भाहरी छात्रों (M=82-13) की तुलना में अधिक आक्रामक होते है।

परिकल्पना

Ho3. सह–शिक्षा व एकल शिक्षा के आधार पर किशोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक 3. सह–शिक्षा व एकल शिक्षा के विद्यार्थियों के आकमकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मूल्य

क. सं.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन		टी मूल्य	परिणाम
1	***सह–शिक्षा***	80	89.46	13.05	158	2.67	परिकल्पना
2	***एकल शिक्षा***	80	86.12	14.61			अस्विकृत

इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के आक्रामकता के परीक्षण से प्राप्त टी मान का मूल्य 2.67 है। टी सारणी मान, स्वतंत्रता अंश (df) 158 के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 है। टी के मान मूल्य को टी के सारणी मान के साथ गणना करने पर पाया कि टी मान मूल्य, टी सारणी मान मूल्य से ज्यादा है।

अतः शून्य परिकल्पना सह–शिक्षा व एकल शिक्षा के आधार पर कि" ाोरों की आक्रामकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत की जाती है। निश्कर्शतः कहा जा सकता है कि सह शिक्षा का किशोरों की आक्रामकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है व भाोध के परिणाम के आधार पर और मध्यमान की तुलना करने पर पाया गया कि सह शिक्षा के छात्रों (M=89-46) एकल शिक्षा के छात्रों (M=86-12) की तुलना में अधिक आक्रामक होते है।

निश्कर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन के निश्कर्श से यह विदित होता है कि परिवार, समाज तथा विद्यालय विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। परिवार व विद्यालय का वातावरण हमेशा एक सा नहीं होता है जिसके कारण विद्यार्थियों में समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है जिससे उनके शैक्षिक व भाारीरिक विकास का मार्ग अवरूद्ध होता है। ऐसी द" ाा में अधिकांश विद्यार्थियों में चिंता, तनाव, भय, क्रोध व चिड़चिडेपन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की समस्या से ग्रसित विद्यार्थियों का व्यवहार आक्रामक व असमान्य होने लगता है, जिसका उनके शैक्षिक प्रगति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

इस भाोध के परिणाम स्वरूप हम कह सकतें है कि माता–पिता की शिक्षा, विद्यालय तथा समाज का वातावरण विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। अतः परिवार, विद्यालय तथा समाज द्वारा विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा तथा वातावरण देनी चाहिए जो विद्यार्थियों में समायोजन की क्षमता, नैतिक मूल्य, कौ" ाल तथा क्षमताओं का विकास करें एवं उनमें प्रेम सौहार्द तथा भाई चारे की भावना का विकास करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

बन्डुरा, ,- (1973)- अग्रेसनः अ सोशल लर्निंग एनालिसिस. इंगलवुड लिफंस, एनजेः प्रेन्टिस–हाल.

ओकैफी, एम. (1997)-ऐडोलसेन्ट एक्सपोसर टू कम्यूनिटी एण्ड स्कूल वायलेंसः प्रीवलेंस एण्ड बिहेवियर कोरिलेट्स. जनरल ऑफ ऐडोलोसेन्ट हेल्थ, 20, 368–376.

आशर, डी. एण्ड एट. अल. (2004)- वार्निंग साइन ऑफ प्राब्लम इन स्कूल्स इकोलाजिकल पर्सपेक्टिव एण्ड इफेक्टिव प्रेक्टिस फॉर कांबटिंग स्कूल अग्रेशन एण्ड वायलेन्स. जनरल ऑफ स्कूल वायलेंस, 3,13–37.

अहमद, अ. (2002)- अ स्टडी ऑफ अग्रेशन लेवल एमांग मिडील स्कूल स्टूडेन्ट. जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, 13 (1)-

लेस्चाइड, ए. एण्ड एट. अल. (2000)- फिमेल एडोलसेन्ट अग्रेसनः ए रिव्यू ऑफ द लिटरेचर एण्ड कोरिलेट्स ऑफ अग्रेसन. ओटावा, कनाडाः सोलिसीटर जनरल

रान्ता, क. एण्ड एट. एल. (2009)-एसोशिएसन बिटविन पीयर पिक्टमाइ जेशन, सेल्फ रिपोर्ट डिप्रेशन एण्ड सोशल फोबिया एमांग एडलोसेन्टस द रोल ऑफ कोमोरबिटी. जनरल ऑफ एडलोसेन्टस, 32(1), 77–93.

फेस्टस, अ., ताजुउद्दीन, अ., एण्ड ओवोइडोहो, उ. (2011)-ए कम्रेटिव स्टडी ऑफ अग्रेसन एमांगस्ट नाइजीरियन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्टस इन नपाइजर डेल्टा रीजन साइकोलॉजी, हेल्थ एण्ड मेडिसीन, 16(1), 86–93.

सिंह, ए.के. (2003)- समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा. संस्करण छठा. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

त्रिपाठी, जे.ओ. (2001)- असमान्य मनोविज्ञान. संस्करण एकादश. आगराः एच. पी. भार्गव बुक हाउस.

त्रिपाठी, एल. बी. (2008)- आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान. संस्करण पंचम, आगराः एच. पी. भार्गव बुक हाउस.